National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040
Impact Factor: RJIF 5.22
www.nationaljournals.com
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 1325-1327

अज्ञेय के काव्य में आधुनिक भावबोध

डॉ0 नीतू शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर, आई0टी0 पी0जी0 कॉलेज, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश

आधुनिक हिन्दी काव्य में 'अज्ञेय' एक प्रज्वलित दीप–स्तम्भ के समान प्रतिष्ठित हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं द्वारा हिन्दी साहित्य को नई दिशा दी है। और अपनी अद्भुत प्रयोगशीलता का परिचय दिया है। टी.एस. इलियट के समान अज्ञेय ने काव्य–रचना के साथ–साथ काव्यालोचन के मानदंड भी निर्धारित किए हैं और उन मानदंडों की कसौटी पर अपने काव्य का मूल्यांकन भी किया है।

प्रमुख शब्द–अनुमति, संवेदना, काव्य यात्रा

प्रस्तावना

'अज्ञेय' का मत है कि कवि का लक्ष्य है–सत्य का अन्वेषण परिज्ञान और उसका सम्प्रेषण। इसके लिए चेतना का संस्कार, संवेदना की तराश और भाषा का परिमार्जन महत्वपूर्ण हैं। इलियट से प्रभावित 'अज्ञेय' निवैयक्तिकता के सिद्धांत को स्वीकार करके कहते हैं कि भोक्ता और रचनाशील मानस का पार्थक्य आवश्यक है। इलियट अनुभव करने वाले कवि और रचनाशील कवि–मन की तुलना प्लेटिनम के तार से करते हैं, तो 'अज्ञेय' भट्टी से, जिसके ताप में विभिन्न धातुएं पिघलाकर एकरस हो जाती हैं। भट्ठी पिघली धातुओं और भट्ठी के मालिक का अस्तित्व अलग–अलग होता है; उसी प्रकार कवि, कवि की अनुभूति और काव्य–रचना तीनों में अलगाव होना चाहिए–''कविता का, कलावस्तु का गौरव, उसकी भव्यता है उस रासायनिक क्रिया की तीव्रता में जिनके द्वारा विभिन्न भाव एक होते और चमत्कार उत्पन्न करते हैं।'' 'अज्ञेय' कविता को संवेग का शैथिल्य नहीं मानते, वह कहते हैं कि कवि संसार की अनुभूतियों और घटनाओं की मिट्टी से काव्य–प्रतिभा का निर्माण करता है। काव्य–रचना के पीछे आंतरिक दबाव होता है, वह आंतरिक विवशता की उपज है, मै नही गाता गीत मुझसे गाया जाता है। रचना करने के लिए वह सत्य का साक्षात्कार आवश्यक बताते हैं। साक्षात्कार द्वारा ही तथ्य सत्य और सत्य अनुभूति बनता है। अनुभूति के अभाव में कलाकार की सर्जनात्मकता उद्दीप्त ही नहीं होती। अनुभूति के परिपक्व होने पर ही सद् काव्य की सृष्टि होती हैः जरा सा और पकने दो , ताने और तपने दो, रिसने और रचने दो।

'अज्ञेय' की काव्य–यात्रा का उद्देश्य है–जीवन की अर्थवत्ता को स्वयं पाना और फिर उसकी अभिव्यक्ति कर पाठकों तक संप्रेषित करना। 'त्रिशंकु' में उन्होंने संकेत किया है कि व्यक्ति के आंतरिक जीवन को बहिर्जीवन में प्रतिष्ठित करना, लोगों में आशा और आस्था का जागरण करना ही कला का उद्देश्य है। उनके अनुसार चेतना का संस्कार करना, आंतरिक मूल्यों को समाज में प्रतिष्ठित करना ही आधुनिकता है। अपनी संस्कृति और परम्परा से अलग होना आधुनिकता नहीं है। पाशविकता की ओर ले जाने वाली, विध्वंस की ओर उन्मुख करने वाली यांत्रिक सभ्यता को वह आधुनिकता नही मानते। निरंतर परिवर्तनशील संस्कारवती चेतना को वह आधुनिकता की धुरी मानते हैं और यहीं उनकी आधुनिकता भारतीयता से मिल जाती है। किसी महान् आदर्श या विचार के लिए जीने को वह यज्ञ मानते हैं।

'अज्ञेय' का विश्वास है कि कोई भी कवि केवल स्वान्तः सुखाय नहीं लिखता; स्वानुभूति को परानुभूति बनाने के लिए ही वह कलम पकड़ता है। वह अपनी रचना के द्वारा पाठक की मनःस्थिति में परिवर्तन लाना चाहता है, पाठक में गहरी संवेदना जगाने के लिए ही काव्य–रचना करता है। इसीलिए वह बोधगम्यता को कविता की अनिवार्य शर्त मानते हैं और इसी संदर्भ में प्रयोगों को आवश्यक बताते हैं, ''जो व्यक्ति का अनुभूत है, उसे समष्टि तक कैसे उसकी सम्पूर्णता में पहुँचाया जाए, यही पहली समस्या है, जो, प्रयोगशीलता को ललकारती है।'' सच्चा प्रयोगशील रचनाकार केवल कौतूहल उत्पन्न करने या पाठकों को चमत्कृत करन के लिए नए–नए प्रयोग नहीं करता, अपितु अपनी भावनाओं को सही रूपाकार देने के प्रयत्न में नए प्रयोगों का आश्रय लेता है। 'कलगी बाजरे की' शीर्षक कविता में वह नया इंडियम अपनाने और प्रयोग करने का रहस्य बताते हैं, नहीं कारण कि मेरा हृदय उथला या कि सूना है या कि मेरा प्यार मैला है। बल्कि केवल यही : ये उपमान मैले हो गए हैं देवता इन प्रतीकों के कर गए हैं कूच कभी बासन अधिक घिसने से मुलम्मा छूट जाता है।

'अज्ञेय' को मर्यादावान विद्रोही कहा जाता है। साँचे में ढले समाज की जगह कुंठा रहित इकाई के पक्षधर हैं। एक ओर उन्होंने कथ्य और शिल्प दोनों में रूढ़ियों से विद्रोह किया है और दूसरी ओर कहीं भी मर्यादा का अतिक्रमण नहीं किया है। परम्परा–पालन, व्यक्ति–मेधा, अनुभूति की प्रामाणिकता, अर्थ की खोज, लय की पहचान तथा भाषा के संस्कार को वह काव्य–रचना के आवश्यक अंग मानते हैं। 'आत्मनेपद' में उन्होंने कहा है, ''जो रजूं वह रागदीप्त सत्य हो।'' अनुभूति की प्रखरता और प्राथमिकता के कारण ही वह 'क्षण' पर बल देते हैं, उसके प्रति आस्था रखते हैं। भोक्ता से द्रष्टा होने का परिवर्तन–क्षण ही स्रष्टा होने की पहली और महत्वपूर्ण शर्त है। अतः 'अज्ञेय' के लिए क्षण का आग्रह क्षणिकता का आग्रह न होकर अनुभूति की प्राथमिकता का आग्रह है और काव्यानुभूति जीवन की अनुभूति से भिन्न होती है। उनके क्षणवाद के पीछे जागरूकता है, अतः वह न तो बुद्ध का क्षणिकवाद है, और छायावादियों का पलायनवाद। उनका सारा बल क्षण की पकड़ में आने वाले सत्य का साक्षात्कार करने और कराने पर है,

सत्य के साक्षात् का, साक्षात् के क्षण का, क्षण के अखंड पारावार का, आज हम आचमन करते हैं।

''आज भाव–सौंदर्य की अपेक्षा भाव–सत्य पर अधिक आग्रह है। काव्य में सौंदर्य और आनन्द के साथ सत्य की उपलब्धि आवश्यक है। संस्कृत आचार्यो ने रस को चमत्कारपूर्ण कहा है। 'अज्ञेय' भी काव्य का रस चमत्कारिक तीव्रता में मानते है। चमत्कार का अर्थ है चित्त का लोकोत्तर विस्तार, जिसमें भाव और ज्ञान दोनों समाविष्ट हैं। साथ ही वह चमत्कारिता का संबंध भाषा की अर्थ–व्यंजना–शक्ति से भी जोड़ते हैं, ''शब्द का प्रत्येक समर्थ उपयोक्ता उसे नया संस्कार देता है। उसमें नये अर्थ की स्थापना करता है।'' उनके अनुसार कविता का सौंदर्य लय की बुनियाद पर टिका है अतः कविता की बुनियादी मांग लय है।

'अज्ञेय' कला या कविता का उत्स क्षति या अतृप्ति में मानते हैं कलाकार का अहं उसे कला–रचना की ओर प्रवृत्त करता है। वह अपने अहं को अखण्ड रखना चाहता है। अतः जब देखता है कि अहं खण्डित हो रहा है तो कला के माध्यम से आत्मदान देकर अपने अहं को अपने अस्तित्व को सार्थक बनाने का प्रयास करता है इस आत्मदान से सर्व कवि को आत्मसुख या आत्मबोध प्राप्त होता है। केवल इसी अर्थ में अज्ञेय काव्य को 'स्वान्तः सुखाय' मानते हैं। वह 'कला के लिए कला' सिद्धान्त का विरोध करते हैं और उन कवियों की आलोचना करते हैं, जो कहते हैं कि हम तो केवल अपने लिए लिखते हैं, दूसरे उनकी रचना को समझें या न समझें। उनका स्पष्ट विचार है कि कवि सत्य का साक्षात्कार कर उसके दूसरे के प्रति निवेदित करता है, उसका सम्प्रेषण करता है। ताकि दूसरों का हित हो।

अज्ञेय के अनुसार काव्य का विषय और काव्य की वस्तु एक नही है, दोनों भिन्न हैं। काव्य वस्तु से उनका तात्पर्य कवि की मूल संवेदना से, सच्ची अनुभूति से है, जिसे वह समप्रेषित करना चाहता है। काव्य का विषय इस सम्प्रेषण का माध्यम है। कवि अपनी मूल संवेदना, अपनी अंतर्दृष्टि, अपनी अनुभूति को सम्प्रेषित करने के लिए इतिहास, पुराण, मिथक किसी से भी विषय चुन सकते हैं तथा नितांत नया विषय भी अपना सकता है। विषय पुराना होने पर कविता की वस्तु नही हो सकती है। धर्मवीर भारती का 'अंधा युग', नरेश मेहता की 'संशय की रात' पौराणिक प्रसंगों पर लिखी गई रचनाएँ हैं, पर उनकी वस्तु, उनकी मूल संवेदना आधुनिक है।

अज्ञेय की दृष्टि में प्रतीक अभिव्यक्ति का माध्यम तो हैं ही, उनके द्वारा कवि अपनी गूढ़–गम्भीर बात को व्यक्त करता है, साथ ही प्रतीक कवि के लिए आत्म–अन्वेषण का, सत्य को जानने का भी माध्यम हैं। इसलिए नए–नए प्रतीकों की सृष्टि होती रहती है। अतः प्रतीक मात्र शिल्प नही है, वह सत्यान्वेषण का साधक है।

काव्यगत विशेषताएं

'अज्ञेय' का काव्य सत्य और अर्थ की खोज का काव्य है। उनकी काव्य–यात्रा का उद्देश्य है जीवन की अर्थवत्ता की उपलब्धि उनके काव्य पर सबसे अधिक प्रभाव टी.एस. इलियट का पड़ा है। यह प्रभाव उनकी विचार–पद्धति और काव्य–शिल्प दोनों में दिखाई देता है। इलियट के समान 'अज्ञेय' के काव्य में भी निराशा, अनास्था, कुंठा आदि का चित्रण हुआ है। उन्होंने प्रायः उन परित्यक्त, वर्जित विषयों पर लिखा है, जिनकी ओर हिन्दी कवियों ने लिखना उचित और उपयोगी नहीं समझा था। 'शिशिर की राका–निशा' कविता में उन्होंने गदहा और वन्य–बिलार का वर्णन किया है : निकटतर धंसती हुई छत, आड़ में निर्वेद, मूत्र–सिंचित मृतिका के वृत्त में, तीन टागों पर खड़ा नत ग्रीव धैर्य–धन गदहा।

अनुभूति को अत्यधिक महत्व देने के कारण ' अज्ञेय' क्षणवादी हैं। उनके क्षणवाद की पृष्ठभूमि में अनुभूतियों की प्रखरता है। पलकों का 'कंपना' नामक कविता में क्षण की महत्ता बताते हैं :

और सब समय पराया है, बस उतना क्षण अपना, तुम्हारी पलकों का कंपना।

प्रणय का चित्रण

'अज्ञेय' के काव्य में प्रणयानुभूति की सशक्त अभिव्यक्ति और नर–नारी के पारस्परिक संबंधों की विवृत्ति उन्हें रोमांटिक कवियों की पंक्ति में बिठा देती है। उनकी प्रणयानुभूति में रक्त की भाषा है, शरीर कर गुदगुदापन है, भावावेग है और नर–नारी की स्वतंत्रता का आख्यान। 'भग्नदूत' की कविताओं में उद्घटित प्रेम एक प्रकार से आदिम प्रेम है। प्रकृति को प्रेममय देखकर प्रेमी के मन में नारी को प्राप्त करने की बलवती आकांक्षा जाग उठती है, घिर गया नभ, उमड़ आये मेघ काले, भूमि के कम्पित उरोजों पर झुका–सा, प्यार है अभिशप्त, तुम कहां हो नारि? प्रेम के ऐन्द्रिय धरातल, मिलन की आकांक्षा, उद्दीपनकारी प्रकृति–चित्रों और अतीत की मधुर सुधियों के बीच कवि को लगता है कि प्यार शाश्वत् है, एक अमूल्य निधि है। उन्होंने कुछ कविताओं में नर–नारी के संबंधों का विश्लेषण भी किया है। नर–नारी का आकर्षण–विकर्षण, पुरूष और स्त्री का चिरंतन संघर्ष उनके प्रणय–काव्य का मुख्य विषय है। कुछ कविताओं में छायावादियों की भाँति चाँदनी रात का चित्रण, प्रिया से एक बार आने का अनुरोध और यौवन की आकांक्षाओं का उल्लेख है। 'झील का किनारा' में प्रथम मिलन के समय दो प्रेमियों के पारस्परिक समर्पण के क्षण की अलौकिक सौंदर्य–सम्पन्न छटा का मोहक चित्र है। प्रणयानुभूति की अभिव्यक्ति में 'अज्ञेय' ने प्रेम का उदात्तीकरण भी किया है। प्रेम केवल भौतिक और शारीरिक ही नहीं, अलौकिक भी होता है, वह मानवता से कुछ ऊपर देवत्व के निकट प्रतीत होता है। 'अंतरंग चेहरा' में कवि ने प्रिय के उन दो लोचनों का चित्रण किया है, जिनमें विश्व के सभी चेहरों का निजीपन है और जो विश्वों से रागात्मक संबंध स्थापित करने के लिए दो वातायन जैसे दिखाई देते हैं। भावात्मक धरातल पर इन आरंभिक कविताओं में 'अज्ञेय' छायावाद से प्रभावित है; शिल्प के क्षेत्र में भी उन्होंने छायावादी रूपकों और उपमानों का प्रयोग किया है। प्रणय के क्षेत्रों में 'अज्ञेय' व्यक्ति की स्वतंत्रता को मानते हैं। डी. एच. लॉरेंस की तरह 'अज्ञेय' भी मानते हैं कि प्रेमी–प्रेमिका एक–दूसरे के आखेटक मात्र हैं, एक दूसरे का निरंतर पीछा करते रहते हैं। उन्होंने प्रेम की स्थापित मान्यताओं के विरूद्ध विद्रोह किया है और प्रेम को निर्बन्ध करने की बात कही हैः

''छिन्न हुआ आचार–नियंत्रण, कैसे बंधे प्रणय आक्रंदन, टूटे गये सब कृत्रिम बंधन।'' 'निरस्त' नामक कविता में 'अज्ञेय' के प्रेम–दर्शन की झांकी मिलती है। उसमें उन्होंने प्रेम के क्षेत्र में ईर्ष्या और द्वेष के निराकरण पर बल दिया है। प्रे प्रगाढ़ता में बांधता नहीं, मुक्त करता है। प्रेम बिना आशा और आकांक्षा के भी संभव है। इस प्रकार 'अज्ञेय' रचनओं में जिस प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है, वह एक ओर फ्रायड के मनोविज्ञान से प्रभावित है और दूसरी ओर उसका उदात्तीकरण किया गया है।

प्रकृति–चित्रण

'अज्ञेय' के काव्य में प्रकृति की अनेक मनोरम झांकियाँ अंकित हैं। कुछ चित्र संश्लिष्ट हैं और कुछ खंडित अनुभूतियों के कारण अधूरे। संश्लिष्ट चित्रों में प्रकृति का यथातथ्य निरूपण हुआ है। उद्वेलित सागर का एक चित्र देखिएः विस्तीर्ण प्रगाढ़ नीला, ऊपर हलचल से भरा, पवन के थपेड़ों से आहत, शत–शत तरंगों से उद्वेलित। प्रकृति के खंडित चित्रों में कोई पूर्ण दृश्य अंकित नहीं हो पाया है, केवल

नाम गिनाये गए हैंः

कुहरा झीना और महीन, झर–झर पर अकास नीम, उजली
लालिम मालती, गंध के डोरे डालती।

प्रकृति के उद्दीपन रूप की छवि ' अज्ञेय' के काव्य में बड़ी तत्परता से अंकित हुई है और उसमें प्रकृति के भयंकर और मनोरम दोनों रूपों की झलक मिलती हैः ''रेतीले कछार का गिरना छप–छड़ाप, झंझा की हुंकार तप्त, पेड़ों का अररा कर टूट–टूट कर गिरना, ओलों की कर्री चपत।'' 'दुर्वाचल' कविता में पर्वत–प्रदेश का सुरम्य, स्निग्ध और कोमल चित्र है। कहीं कवि प्रकृति के साथ तादात्म्य स्थापित कर एक नया जीवन प्राप्त करता है और कहीं उसके दर्शन करता है, जो गोचर में भी अगोचर है। मानवीकरण के रूप में प्रकृति के कितने ही भव्य चित्र ' अज्ञेय' के काव्य में मिलते हैं। संध्या मानवी की भांति चुपके से घर में प्रवेश करती है, सूनों–सी सांझ एक, दबे पांव मेरे कमरे में आयी थी, मुझको वहाँ देख, थोड़ा सकुचाई थी।

निष्कर्ष

इस प्रकार 'अज्ञेय' के काव्य में प्रकृति अलंकरण तक सीमित नहीं हैं। उनके काव्य में एक ओर प्रकृति के मादक और मोहक चित्र अंकित किए गए हैं और दूसरी ओर प्रकृति के साथ तादात्म्य स्थापित किया गया है। उनके प्रकृति–चित्रण में निरीक्षण की सूक्ष्मता, कल्पना का लालित्य, अनुभूति की तरलता और दृष्टि की ताजगी है, जिसके फलस्वरूप प्रकृति के चित्र सजीव हो उठे हैं, परन्तु अनेक स्थलों पर जहाँ बौद्धिकता कुहासा छा गया है, वहाँ प्रकृति का सौंदर्य पूरी तरह प्रस्फुटिक नहीं हो पाया है।

सन्दर्भ सूची

1. सर्वेश्वर, अज्ञेय और मुक्तिबोध–डॉ0 कृपा शंकर पाण्डेय–शिवम् प्रकाशन, इलाहाबाद
2. समकालीन कविता का परिप्रेक्ष्य–डॉ0 रेवती रमण–नवनीत प्रकाशन, इलाहाबाद
3. समकालीन सृजन सन्दर्भ–भारत भारद्वाज–वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
4. कवि परम्परा तुलसी से त्रिलोचन–प्रभाकर श्रोत्रिय–भारतीय ज्ञानपीठ
5. नयी कविताएं एक साक्ष्य–राम स्वरूप चतुर्वेदी–लोक भारती प्रकाशन
6. हिन्दी भाषा और साहित्य का इतिहास तथा काव्यांग परिचय–डॉ0 सूर्यप्रसाद दीक्षित, प्रकाशन केन्द्र–लखनऊ